हिंदी का शब्द समूह

जिस प्रकार भिन्न-भिन्न जाति धर्म आचार-विचारवाले व्यक्ति जब परस्पर संपर्क में आ जाते हैं तब एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। एक दूसरे के विचारों को ग्रहण करते हैं। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न विचारों, भावों वाले व्यक्ति एक दूसरे के संपर्क में आते हैं तब उनमें परस्पर विचारों, भावों का आदान-प्रदान होता है। यही स्थिति भाषा की होती है। दो भाषा भाषियों का मिलन दोनों की भाषाओं को प्रभावित करता है। यही कारण है कि संसार की कोई भी भाषा कितनी भी समृद्ध क्यों न हो, यह दावा नहीं कर सकती कि वह संपूर्णतः शुद्ध है। उसमें किसी न किसी भाषा के शब्द अवश्य होते हैं। शब्दों का आदान-प्रदान केवल देशी भाषाओं में ही नहीं बल्कि विदेशी भाषाओं के साथ भी होता है। एक भाषा दूसरी भाषा के संपर्क में आने पर एक दूसरे के शब्द ग्रहण किए जाते हैं और बाद में उसी भाषा के साथ वे शब्द मिलने के कारण पता भी नहीं चलता कि यह शब्द दूसरी भाषा का है। इस दृष्टि से हिंदी भाषा के शब्द समूह में न केवल भारतीय भाषा भाषाओं के प्राचीन शब्द है अपितु विदेशी भाषा के भी शब्द है। हिंदी भाषा के शब्द समूह का परिचय प्राप्त करने के लिए उसे निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं –

- भारतीय शब्द
- विदेशी शब्द

दूसरी भाषा से आए हुए, निर्मित, उधार लिए गए सभी शब्दों को मिलाकर जो शब्द भाषा में प्रयुक्त होते हैं उन्हें 'शब्द समूह' कहा जाता है। अब तक हिंदी के शब्दों की गणना करने से विद्वानों का अनुमान है कि हिंदी में लगभग 200000 शब्द है। हिंदी के सबसे बड़े बृहत हिंदी कोष में 136000 शब्दों का अनुमान है। इस प्रकार शब्द समूह की दृष्टि से हिंदी एक संपन्न भाषा है। इसमें आधे शब्द तद्भव है । तद्भव शब्दों के बाद तत्सम शब्दों की संख्या अधिक है। कुल शब्दावली का छठा हिस्सा देशी भाषाओं के शब्दों का है और विदेशी शब्द 1/6 के लगभग है विदेशी शब्दों का हिंदीकरण हो गया है। वर्गीकरण सुविधा की दृष्टि से हिंदी शब्द समूह को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है –

1) तत्सम शब्द
2) तद्भव शब्द
3) देशी शब्द
4) विदेशी शब्द

1] तत्सम शब्द : – तत्सम शब्द संस्कृत के शुद्ध शब्दों को कहते हैं अर्थात तत्सम शब्द संस्कृत के समान होते हैं।

जैसे – विद्या, अविद्या, कक्ष, कक्षा, मुक्ति, युक्ति, जल, नगर, प्रातः, प्राण, अर्जुन, अहिंसा, अग्नि अभिषेक,, दया,, दान, धर्म, नर, कन्या, ओष्ठ्य आदि

तत्सम शब्दों को 4 वर्गों में विभाजित किया जाता है –

1] प्राकृत – अंचल, अद्य, काल, कुसुम आदि। इन शब्दों की मात्रा बड़ी संख्या में दिखाई देती है।

2] भक्ति, रीति और आधुनिक काल में संस्कृत से सीधे लिए गए शब्द – भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में संस्कृत से सीधे बड़ी संख्या में शब्द ग्रहण किए हैं। जैसे-- पुष्प, मेघ, विद्या आदि।

3] संस्कृत के व्याकरण के आधार पर हिंदी में निर्मित शब्द – जैसे जल-वायु, आब-हवा, वायु-यान आदि। इस प्रकार के शब्द, शब्दों की कमी को पूर्ण करने के लिए आज भी बनवाए जाएंगे और कल भी।

4] अन्य भाषाओं से आए हुए तत्सम शब्द –

इनकी संख्या हिंदी में बहुत कम है। उदाहरणार्थ- बंगाली भाषा – उपन्यास, संदेश, कविराज आदि

मराठी- वाङमय, प्रगति।

2] तद्भव शब्द -- तद्भव का शाब्दिक अर्थ है - 'उससे उत्पन्न' । तद्भव शब्द उनको कहते हैं जो संस्कृत के शुद्ध शब्दों से निकले हैं लेकिन उन्हें विकसित किया गया है।

जैसे –

अंधकार > अंधेरा	कर्ण > कान	मुख > मुँह	जीव्हा > जीभ
क्षीर > खिर	सर्प > साप	भ्रमर > भौरा	कृष्ण > कान्ह
दुर्बल > दुबला	सत्य > सच	धूम्र > धुआं	रात्रि > रात

दुग्ध > दूध	अग्नि > आग	गृह > घर	गर्दभ > गधा
कर्म > काम	नृत्य > नाच	हस्त > हाथ	आम्र > आम

हिंदी में तद्भव शब्दों की मात्रा अधिक दिखाई देती है।

3] देशी शब्द / देशज शब्द : – देशज शब्द स्थानीय भाषा के शब्द होते हैं। बोलचाल के आधार पर स्वतः निर्मित हो जाते हैं उसे देशज शब्द कहते हैं। इन्हें देशी शब्द भी कहा जाता है। देशज शब्दों के परिभाषा के संबंध में विवाद है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार देशज शब्द वे है जिनकी व्युत्पत्ति का हमें पता नहीं, देशज माने जाने वाले शब्द देशज हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते अर्थात उनकी व्युत्पत्ति अज्ञात होती है। अतः भोलानाथ तिवारी इन्हें देशज शब्द ना कह कर अज्ञात व्युत्पत्तिक कहना चाहते हैं।

देशज शब्दों के दो प्रकार होते हैं –

- अनुकरण से युक्त देशज शब्द
- अनुकरण से रहित देशज शब्द

अनुकरण से युक्त देशज शब्दों में काव-काव, धक्का, टक्कर, खुसर-फुसर, चू-चू, फड़-फड़, धक-धक, चम-चम, टक-टक,खटखटाना,कल-कल तथा पशु पक्षियों की आवाज इसमें आती है। अनुकरण रहित देशज शब्दों में जूता, लोटा, घेवर, झंडा, मुक्का, लकड़ी, कपास आदि.

विदेशी शब्द – विदेशी शब्द का अर्थ है- " ऐसे शब्द जो विदेशी भाषा से हिंदी में आए हो. " इन शब्दों को विदेशी के स्थान पर गृहीत या आगत कहना अधिक उचित होगा क्योंकि ऐसे शब्द विदेशी भाषा से ही आने चाहिए ऐसा नहीं है क्योंकि 'दोसा' शब्द हिंदी में प्रयुक्त होता है जो कि मूल दक्षिण से है तो उसे भी विदेशी श्रेणी में ही रखा जाता है। अतः विदेशी शब्दों को 'गृहीत' या 'आगत' कहना योग्य होगा।

- फारसी – हिंदी में फारसी के 2000 से 3000 शब्द आए हैं। उदाहरणार्थ – रोजा, कुरान, खुदा, फरिश्ता, कमीज मोहल्ला देहात शहर बुखार जुकाम दवा मरीज बीमार मौजा
- अरबी – अदालत, हिरासत, हकीम, दफा, दफा, मुकदमा, फैसला, हराम, ईद, लकवा, एहसान आदि।
- तुर्की – अरबी, फारसी की तुलना में तुर्की शब्दों की मात्रा बहुत कम है। उदाहरणार्थ – उर्दू, तुर्क, बहादुर, कैंची, चाकू, दरोगा, बेगम, लाश, बीबी।
- पश्तो – पश्तो अफगानिस्तान की भाषा है तथा यह भारत ईरानी परिवार से विकसित हुई है। भारत में अफ़गानों का भी शासन रहने के कारण उनके शब्द भी हिंदी में मिलते हैं। लगभग 1000 शब्द हिंदी में प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ – पटाखा, गुंडा, आचार, डेरा, पठान , अखरोट आदि।
- पुर्तगाली – भारत में पुर्तगाल बहुत पहले आए थे लेकिन उनकी भाषा के 1000 के अंदर शब्द मिलते हैं। उदाहरणार्थ – अलमारी, चाय, कॉफी, काजू, गोभी, स्त्री, आया, चाबी आदि।
- फ्रेंच – कारतूस, अंग्रेजी, कूपन।
- डच – बम
- स्पेनी – सिगार, सिगरेट।
- जापानी – रिक्शा
- जर्मन – ट्रेन, सेमिनार
- अंग्रेजी – अंग्रेजी का शासन हमारे देश पर लगभग 200 वर्ष था इस शासनकाल में अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा, राजनीति, शासन और संस्कृति को प्रभावित किया अंग्रेजी के 30000 शब्दों से अधिक शब्द हिंदी में दिखाई देते हैं।

  निम्नलिखित विविध क्षेत्रों में विविध शब्द अंग्रेजी से ग्रहण किए हैं
- धातुओं के नाम – रोल्ड, सिल्वर, गोल्ड, जर्मन आदि
- यंत्रों के नाम – इंजन, मीटर, कैमरा, ग्रामोफोन, रेडियो, टाइपराइटर, टेप रिकॉर्डर, टेलीफोन आदि
- सवारीओं के नाम – बस, टैक्सी, स्कूटर, कार, ट्रेन आदि।
- चिकित्सा संबंधी नाम – इंजेक्शन, ऑपरेशन, डॉक्टर, नर्स, कैंसर, कॉलरा, टीबी, हार्ट अटैक आदि
- शिक्षा संबंधी नाम – नर्सरी, स्कूल, हाई स्कूल, प्राइमरी, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, मास्टर, डिग्री आदि।
- पोशाख संबंधी – पैंट, शर्ट,कोट, टाई आदि
- शासन / न्याय के संबंधी – कोर्ट, हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, इंस्पेक्टर, ऑफिसर, अपील आदि

- प्रेस संबंधी – प्रेस, टाइप, प्रूफ, रिडर, कंपोझिटर आदि।
- महीनों के नाम – जनवरी, फरवरी, मार्च,अप्रेल, मई, जून जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर
- खेल के संबंधी – टिम, फुटबॉल, टेनीस, हॉलीबॉल, रन, बैट, स्टम्प, गोल आदि।
- सेना / युद्ध संबंधी – कंपनी, मेजर, मशीन, लेप्टनंट, गन, बम,परेड आदि।

इस प्रकार हिंदी का शब्द समूह तत्सम, तद्भव, देशज, और विदेशी शब्द के संयोग से बना है।

संदर्भ ग्रंथ –

1) भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा,किताब महलएजेंसीज पटना, संस्करण- 2002
2) देवेन्द्रनाथ शर्मा,दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली, संस्करण 2001
3) डॉ. मिथिलेश शर्मा और अन्य भाषा के विविध रूप और संचार माध्यम,विनय प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2003